फीचर

एक अनूठा स्कूल

जहां बच्चे जाते घर को भूल

❑

सन्दीपकुमार आचार्य

बालक विद्यालय को अपना घर समझे और स्वत: ही दौड़ा चला आए। इसी विचार के साथ जोधपुर के पास छोटे से गांव पीशावास में दो वर्ष पहले एक विद्यालय शुरू किया गया। स्वामी कृष्णानंद इस विद्यालय की संकल्पना के प्रेरणास्रोत बने। स्वामीजी जो पूर्व में अध्यापक थे। एक सच्चे अध्यापक। बहुत ही सहज और अपनत्व से भरे हुए। विश्वविद्यालय में वाणिज्य विषय पढ़ाते थे। जो भी विद्यार्थी संपर्क में आता उसे अपने स्नेह से सराबोर कर देते थे। अपने पास जो भी ज्ञान है उसे अपने विद्यार्थियों को पूरा का पूरा बांट देना चाहते थे। स्वामीजी की प्रेरणा से बने विद्यालय के संबंध में जानकारी दे रहे हैं संदीपकुमार आचार्य। ❑ सं.

आज का युग विज्ञान की भौतिक उपलब्धियों से उपकृत और चमत्कृत है। इस भौतिक चमत्कार की चकाचौंध में हम दिग्भ्रमित हो गए; क्योंकि जगमग प्रकाश में दिशाएं तो ख़ूब दिखीं, पर मंजिल की राह पहचान न सके। 'बिजली की रोशनी' के लिए ख़ून-पसीना एक करते रहे, पर 'शिक्षा की रोशनी' का मोल समझना आवश्यक नहीं समझे।

शिक्षा की रोशनी थोड़ी-बहुत शहर तक तो पहुंच गई, पर गांव में बिजली की आंख-मिचौनी से भी अधिक विकट समस्या बनी 'शिक्षा-दीप' से सबको प्रदीप्त करने की। गांव तक आते-आते शिक्षा के दीप से तेल और बाती दोनों गायब ! आश्चर्य की बात है कि अनपढ़ ग्रामीणों ने शिक्षा रूपी दीप के दर्शन भी नहीं किए।

यदि नई पीढ़ी ने सरकार की कृपा से दर्शन किए भी तो **नाम बड़े और दर्शन छोटे** की कहावत चरितार्थ करने के लिए। सरकारी शालाओं में 'घड़ी' और 'छड़ी' की रामकहानी यूं है कि 'ज्ञानार्थ प्रवेश' के समय माड़साब की घड़ी की सूई मन्द-मन्द चलती है और कक्षा में मन्दमति छात्रों के प्रति विशेष ध्यान के नाम पर 'छड़ी' नामक अमोघ अस्त्र का मनमाना उपयोग इस क़दर शुरू होता है कि कलाई में बंधी घड़ी को उस मासूम पर दया आ जाती है तथा छड़ी की रफ़्तार में घड़ी चलने लगती है, तब तुरन्त बज जाती है शाला की घण्टी - टन्-टन्-टन् ! फिर बच्चे हो जाते हैं फु..फु..फु..फुर्र..!!

शायद हमारे गांधी बाबा ने कहा था कि एक विद्यालय खुलने की सार्थकता तब है जब एक जेल बन्द हो जाए। परन्तु, दुर्भाग्यवश हमारे विद्यालय ही बच्चों के जेल के रूप में सक्रिय हैं। छुट्टी होते ही बच्चे स्कूल से घर की ओर यूं भागते हैं जैसे जेल से कैदी छूटे हों।

यह कटु सत्य है कि 'छड़ी' से भयभीत कितने ही बालमन 'बारहखड़ी' भी नहीं सीख सके। छड़ी की झड़ी कोमलमति छात्र-छात्राओं के मन में विद्यालय के प्रति दुर्भाव भरती रही है - परम्परा से। पटना से प्रकाशित मासिक पत्रिका 'माध्यमिक शिक्षा दर्पण' का एक प्रभावशाली एवं स्थाई स्तम्भ काफी लोकप्रिय हुआ था- 'मास्टरजी की छड़ी'।

मास्टरजी की छड़ी की बेरहमी से बेदिल घड़ी के दयालु हो जाने की कथा से परिचित होने के बाद मन में उथल-पुथल स्वाभाविक है कि क्या कोई इंसान द्रवित नहीं हुआ इन मासूमों के प्रति ? अन्तर कहता है, इन्हीं नौनिहालों में दिव्यता की अनुभूति करते हुए मां मॉण्टेसरी ने स्वयं को इनके प्रति पूर्ण समर्पित कर दी। पुण्यश्लोक गिजुभाई वकालत छोड़कर शिक्षक बन गए और 'मूंछोवाली मां' के रूप में विख्यात हुए।

इन्हीं स्वनामधन्य आत्माओं की श्रेणी में पुण्यश्लोक स्वामी कृष्णानन्दजी जो पूर्व में प्रोफेसर जयकृष्ण व्यास के नाम से जाने जाते थे का नाम और काम उल्लेखनीय है। जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर की सेवानिवृत्ति के पश्चात्, कालान्तर में, आपने वानप्रस्थाश्रम अंगीकार किया। आध्यात्मिक साधना करते हुए महिला महाविद्यालय, जोधपुर की स्थापना में आपने तन-मन-धन से स्वयं को अहोभावपूर्वक समर्पित किया। 'नारी शिक्षा' की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य करते हुए आप 'बाल शिक्षा' की समस्याओं एवं उनके समाधान के बारे में अहर्निश चिन्तन करते रहते। आपके व्यक्तित्व की विशिष्टता यह रही कि आपने कभी साधनों की चिन्ता नहीं की। आपका कहना था : **साधना की कमी नहीं होगी तो साधन स्वत: सुलभ होंगे।**

आप चाहते थे कि बालक विद्यालय नहीं पहुंचे, पर विद्यालय बालक के पास अवश्य पहुंचे। तात्पर्य यह कि विद्यालय का परिवेश ऐसा हो कि उसकी सुरभि हर घर तक पहुंचे और बालक विद्यालय को अपना घर समझते हुए स्वत: चला आए।

कल्पना की कीजिए, जहां मां-बाप-अभिभावक बच्चे को कहते हों कि **मान जा, नहीं तो स्कूल भेज दूंगा,** वहीं नौनिहालों में यह भाव भरने की संकल्पना जो अभिभावकों को प्रत्युत्तर रूप में कह सके - **देखना ! मैं स्कूल चला जाऊंगा।** कितनी अद्‌भुत संकल्पना है यह !

यह जानकर आप सबको सुखद आश्चर्य होगा कि स्वामी कृष्णानन्दजी की इस संकल्पना एवं स्वप्न को साकार-सार्थक करने के निमित्त, जोधपुर शहर से २५ किलोमीटर की दूरी पर स्थित गांव पीशावास में १ जुलाई, २००३ को एसफोर्ड एकेडमी का शुभारंभ किया गया। जोधपुर जिले की

स्वामी कृष्णानन्द

लूणी तहसील का यह गांव सुविख्यात अमृतादेवी विश्नोई स्मारक, खेजड़ली से मात्र चार किलोमीटर की दूरी पर है। यहां स्थापित एसफोर्ड एकेडमी, १३६ बीघा के विशाल भू-खण्ड पर संचालित बहु-योजनामयी सेवा संस्था **सोसायटी फॉर रैशनल डवलपमेण्ट** की महत्वपूर्ण इकाई है।

वर्तमान में एकेडमी का स्वरूप **उच्च प्राथमिक पाठशाला** का है। आठवीं कक्षा तक की समुचित शिक्षा की यहां व्यवस्था है। यह शिक्षण संस्थान राजस्थान सरकार से मान्यता प्राप्त है, परन्तु संचालित है उदारमना सहयोगियों के अकृपण आर्थिक सहयोग तथा भरपूर प्रोत्साहन से।

एसफोर्ड एकेडमी में विद्यार्थी का प्रवेश तो नि:शुल्क है ही, पाठ्य पुस्तकें और स्टेशनरी सामानों की सुलभता भी शुल्कमुक्त है। मज़े की बात यह है कि बच्चों की पीठ पर बस्ते का भारी बोझ भी नहीं है। किताब-कॉपी, स्लेट-पेन्सिल इत्यादि सामग्री बच्चों के **डेस्क** में ही सुरक्षित रखी रहती हैं। मतलब **होमवर्क** से मुक्ति।

औपचारिक पढ़ाई से अधिक मूल्यवान है हमारे यहां का मुखपाठ (रेसिटेशन)। मुखपाठ के दैनिक अभ्यास से छोटे बच्चे भी लगभग उतनी जानकारी हासिल कर लेते हैं जो बड़ी कक्षा के छात्र जानते हैं। हमारे विद्यार्थी परीक्षाओं की चिन्ता से भी मुक्त हैं।

छात्रों के मूल्यांकन का आधार सिर्फ औपचारिक शैक्षिक जानकारी नहीं, अपितु एसफोर्ड परिसर में प्रवेश के बाद से जब तक छुट्टी नहीं हो जाती तब तक की गतिविधियों को देखते दैनिक पूर्णांक (१०) में से यथोचित अंक सभी शिक्षकों की सहमति से प्रदान किए जाते हैं। यदि कोई निचले दरजे का विद्यार्थी समय-पूर्व होशियार हो जाता है तो पीरियड फ्री प्रमोशन की व्यवस्था के अनुसार तत्काल अगली कक्षा में प्रवेश की अनुमति दे दी जाती है।

एसफोर्ड एकेडमी किसी भी पर्व-त्यौहार, सरदी-गरमी अथवा रविवार के अवकाश की औपचारिकता में विश्वास न करके व्यक्तिगत आवश्यकता के अनुसार अवकाश का आवेदन सहर्ष स्वीकार करती है। पर्व-त्यौहारादि के दिन उस उत्सव के बारे में विशेष जानकारी बच्चों को दी जाती है। व्यक्तिगत अवकाश का विशेष लाभ यह है कि संस्थागत गतिविधियां यथावत् चलती रहती हैं और व्यक्ति के निजी कार्य भी सम्पन्न हो जाते हैं।

सप्ताह के दो दिनों - रविवार और बुधवार को यहां किताबी पढ़ाई नहीं कराई जाती। रविवार को **लर्निंग विथ लाफ्स डे** के रूप में मनाते हुए विद्यार्थियों के इच्छानुसार चित्रकारी, संगीत, कम्प्यूटर इत्यादि की जानकारी दी जाती है। विद्युत

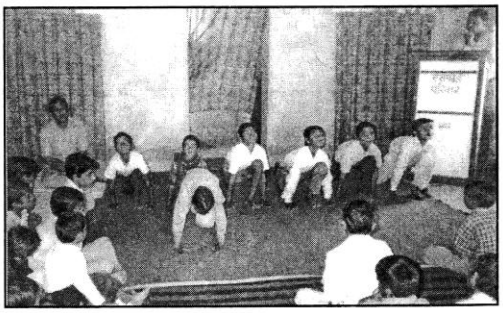

की सुविधा नहीं होने के कारण 'जेनरेटर' चलाकर 'कम्प्यूटर' की जानकारी दिए जाने से छात्र-छात्राओं में विशेष आकर्षण है। इस विशेष आकर्षण का विशिष्ट स्वरूप बुधवार यानी हैप्पी डे को दृष्टिगोचर होता है। बुधवार को बच्चे चाहे कबड्डी खेलें, क्रिकेट खेलें, कैरम खेलें, फुटबॉल खेलें या फिर कुश्ती इत्यादि का मज़ा लें, यह उनकी इच्छा पर निर्भर है। इसी प्रकार, बच्चियां भी अपनी दीदी या सहेलियों के साथ लोकगीत, लोकनृत्य या रुचि के खेल खेलने में लगी रहती हैं। इन्हें अपने घर की याद नहीं सताती है। घर-सा माहौल यदि शाला में मिले तो बच्चे घर के लिए क्यों रोएं ?

कभी-कभी तो लगता है कि 'खेल-खेल में शिक्षा'की पद्धति पर विशेष बल दिया जाए तो शिक्षा की सार्थकता सिद्ध हो जाएगी। स्वामी विवेकानन्द गीता के स्वाध्याय से पूर्व मैदान में फुटबॉल खेलने की मन्त्रणा दिया करते थे। इसका आशय यही था कि गीता जैसे गूढ़ ग्रन्थ को समझने के लिए शारीरिक, मानसिक स्वास्थ्य परमावश्यक है।

एसफोर्ड कैम्पस में खेलकूद के लिए सुविस्तृत मैदान तो है ही, हमारे प्रेरणास्रोत स्वामी कृष्णानन्दजी की स्मृतियों को समर्पित समृद्ध पुस्तकालय भी है जिसमें बालोपयोगी-छात्रोपयोगी, सामान्य जनोपयोगी-विद्वज्जनोपयोगी रोचक-प्रेरक साहित्य तथा सन्दर्भ ग्रन्थ भी हैं। इसके अलावा कई प्रकार की पत्र-पत्रिकाएं भी हैं। १६ नवम्बर, २००३ को लोकार्पित पुस्तकालय निरन्तर समृद्ध होता जा रहा है। पुस्तकालय की समृद्धि हेतु श्रद्धानिधि (धनराशि) के अतिरिक्त श्रद्धालु विज्ञजनों की इच्छा का सम्मान करते हुए पठनीय साहित्य भी स्वीकार किया जाता है। ऐसी नीति इसलिए कि कालान्तर में उच्च एवं उच्चतर अध्ययन से सम्बद्ध छात्र-छात्राओं को आवश्यक सन्दर्भ साहित्य सहज सुलभ हो सके।

ग्रामीण बच्चों में जो प्रकृति प्रदत्त प्रतिभा है, उसके बारे में क्या कहा जाय ? मिट्टी के एक-से-एक खिलौनें बनाने में माहिर हैं ये। लोकगीत तो इनकी ज़ुबान पर ही होते हैं। परिश्रमी भी खूब होते हैं। यदि बस छूट जाए तो ५-६ कि.मी. पैदल चलकर नियमित विद्यालय आने से नहीं चूकते हैं हमारे बच्चे।

प्रतिमाह तृतीय बुधवार हैप्पी डे को विद्यालय की ओर से बच्चों को भ्रमण के लिए ले जाया जाता है। यदि पुस्तक मेला हो, स्वदेशी मेला हो, हस्तशिल्प उत्सव हो या फिर विज्ञान प्रदर्शनी दिखाने की बात हो तो तृतीय बुधवार की प्रतीक्षा नहीं की जाती। यथा-समय ही भ्रमण का कार्यक्रम बन जाता है। बुज़ुर्गों का कहना है कि भ्रमण (देशाटन) से बुद्धि ठीक वैसे ही विस्तृत होती है जैसे जल की सतह पर तेल की बूंद फैलती है।

आने वाले समय में छात्रावास के स्वरूप का भी विस्तार किया जाएगा, ताकि 'शिक्षक और शिक्षार्थी' के साथ-साथ रहने की शुभ संकल्पना सार्थक हो सके।

अब मूलभूत प्रश्न जो पुनः पुनः सिर उठाता है कि आखिर बच्चे बड़े होंगे, शिक्षित हो जायेंगे, उसके बाद इनका क्या होगा ? भविष्य कैसा होगा ? चिन्ता गैर-वाजिब नहीं। पर चिन्ता हावी हो, उससे पहले 'एसफोर्ड ने समुचित चिन्तन किया, उसके क्रियान्वयन हेतु प्रयत्नशील भी है।

गांव के बच्चे बड़े होकर रोजगार के चक्कर में शहर की ओर पलायन न करें,

सलेक्ट यानी स्फोर्ड लर्न एण्ड अर्न सेन्टर ताकि विद्यार्थियों को यथोचित प्रशिक्षण देने के बाद उन्हें स्वावलम्बी बनाया जाए। ध्यातव्य है, नौकरी जहां इन्सान को स्वार्थी बनाती है, वहीं आदर्श आजीविका (स्वरोजगार) हमें पदे-पदे ईमानदारी का पाठ पढ़ाती है।

सचमुच, शिक्षा की सार्थकता तभी है जब इन्सान का ईमान फूलता-फलता रहे। शिक्षित व्यक्ति जहां भी रहे, समाधान बनकर रहे, समस्या बनकर नहीं। हमें शिक्षित बेरोजगारों की फौज नहीं खड़ी करनी है, इसलिए हम अपनी सीमा को ध्यान में रखते हुए समाज के ज़रूरतमन्द और सहयोगी, दोनों का सादर आह्वान करते हैं। आइए, हमारी संकल्पना और योजनाओं को समझें और हमें अपने सहयोग तथा सुझाव से लाभान्वित करें, ताकि हम भी उन्हें लाभान्वित कर सकें जो आशान्वित हैं।

नवागन्तुकों का सदैव स्वागत ! स्वागतं ते शुभागमन: !! ❑

एसफोर्ड कैम्पस, पीशावास, पोस्ट : मोडी जोशियान वाया : बनाड़-३४२ ०२७, जिला जोधपुर (राज.)

इसके लिए कृषिकार्य के समुचित विस्तार हेतु 'एसफोर्ड' परिवार कटिबद्ध है।

प्रयत्न के प्रगत चरण के रूप में १० जून, ०४ को **एसफोर्ड गोसेवा एवं शोध संस्थान** का शुभारम्भ विशेष उल्लेखनीय है। प्रबुद्ध पाठक सोचेंगे कि पाठशाला और गोशाला की युगलबन्दी के पीछे क्या तुक है? यदि हम अपने धर्मशास्त्रों का अवलोकन करेंगे तो पाएंगे कि भारतीय अर्थशास्त्र की रीढ़ है - हमारी गोमाता। एक गाय के पेट में सात कारखाने चलते हैं :

- गाय का दूध संपूर्ण आहार एवं अमूल्य औषधि है।
- गोदुग्ध-निर्मित दही व छाछ अतीव गुणकारी है।
- घी का मोल तो अनमोल है। शुद्ध घी खाए सो जाने।
- गोमूत्र श्रेष्ठ कीटनाशक है। चर्मरोग एवं अनेक ज्ञाताज्ञात रोगों की रामबाण दवा है।
- गोबर हानि रहित लाभकारी खाद है।
- गोवत्स (बछड़ा) आज भी ट्रेक्टर का विकल्प है। बछड़े की जुताई से खेतों की उर्वराशक्ति अक्षुण्ण रहती है।
- वैज्ञानिक कहते हैं कि गाय के रोम-रोम से हमें प्राणवायु (ऑक्सीजन) मिलती है।

एक आदर्श गोशाला अपने इलाके का कितना बड़ा कल्याण कर सकती है, यह शब्दों में नहीं कहा जा सकता। इसके अतिरिक्त एक और महत्वपूर्ण प्रकल्प है -

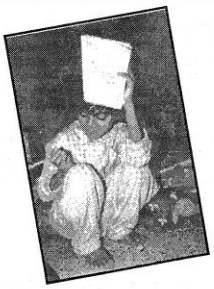

जनवरी अंक में यह फोटो प्रकाशित कर शीर्षक भेजने का आग्रह पाठकों से किया गया था। सुधी पाठकों से प्राप्त हुए शीर्षक यहां प्रकाशित हैं। ❑ सं.

○ **बीज, अंक, रेखा गणित,**
गिण गिण हारी देख।
गिणतां गिणतां घिस गई,
आंगळियां री रेख॥

○ **जोड़ करी पर नह जुड़ी,**
बाकी रही न देख।
गुण न मळ्या गुणा कियां,
कठण भाग रो लेख॥

राधेश्याम मेहता, उदयपुर

○ **पढ़ने की चाह में, सीखने की राह में,**
पहला कदम बढ़ाया है।

अश्विनी कुमार, हापुड़

○ **पढ़ने की मन में आस लिए।**
कुछ सोच रही उल्लास लिए॥
मुझको भी आगे बढ़ना है।
छलक रहा हुलास हिए॥

टेकचन्द शर्मा, झुंझुनू

○ **जरा कर लूं गणना**
मैं भी अपने होने की।

○ **बालिका हूं मैं भी पढ़ूंगी।**

○ **विश्वास है कर लूंगी हल**
स्वयं हर सवाल का।

○ **जानती हूं लड़की हूं पर दूंगी जवाब**
जीवन के हर सवाल का।

माधुरी जैन, जयपुर

○ **मेरी मेहनत, मेरा काम।**
देगा मुझे नया मुकाम॥

सुशीलकुमार, हापुड़

○ **अंधेरे का हिसाब कर दूं,**
रोशनी की आस में,
तुम थोड़ा सा सुस्ताओ,
समय कहां मेरे पास में।

○ **मेरा भविष्य मैं लिखूंगी।**

शिशुपाल सिंह, बेसवा (सीकर)